शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

यशपाल के उपन्यासों में चित्रित निम्न वर्ग

प्राप्तिः 31.10.2022
स्वीकृतः 24.12.2022

82

डॉ० पूनम भारद्वाज
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़
ईमेलः *poonambhardwajdr@gmail.com*

सारांश

सृष्टि के आरम्भ से ही मानव ऐसे संसार की कल्पना करता रहा है। जिसमें सब व्यक्ति समान हों, सभी प्राणियों में किसी प्रकार का भेद–भाव न हो। यह कल्पना वास्तविक जीवन में सम्भव नहीं है। समाज में सभी व्यक्तियों को समान स्थिति अथवा पद प्राप्त नहीं हो सकता। इसका कारण यह हैं कि समाज के सभी व्यक्तियों की योग्यता और बुद्धि समान नहीं होती। इसी कारण कुछ व्यक्तियों को उच्च पद प्राप्त होता है और कुछ को निम्नपद की प्राप्ति होती है। कुछ व्यक्ति बेरोजगार ही रह जाते हैं। हमारा समाज तीन वर्गों में बंटा हुआ है– उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग। इस प्रकार समाज का विभाजन होने पर उसका जो निचला हिस्सा है उसे निम्न वर्ग कहा जाता है।[1] निम्न वर्ग समाज की एक विशेष इकाई हैं, जिसमें कई प्रकार के लोग होते हैं, जैसे– चपरासी, मजदूर, किसान, श्रमिक और अन्य नौकरीपेशा लोग। इनकी मूलभूत समानता इन्हें एक सूत्र में बांधती है।

यशपाल हिंदी उपन्यास जगत के एक क्रांतिकारी उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके अधिकांश उपन्यास साम्यवादी विचारों के समर्थक हैं। उनके उपन्यासों में दलित, पीड़ित और शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति है। समाज में निम्न वर्ग के व्यक्तियों को निम्न स्तर का माना जाता है, इसलिये उन्हें निम्न जगह में निवास करना पड़ता है। निम्नवर्ग का जीवन कठिनाइयों और दुःखों से भरा है, उनके लिये रोटी की समस्या सबसे बड़ी समस्या है। वस्त्र, मकान आदि के विषय में तो वे सोच भी नहीं सकते। उनके रहने के स्थान अत्यन्त गन्दे एवं कच्चे हैं। जो मात्र सिर छुपाने के लिये हैं। उनके घरों के रास्ते कच्चे तथा गड्ढ़ों से युक्त हैं। जो गड्ढ़े गंदे जल से भरे हैं। जिन पर मक्खियों और मच्छरों के बादल मंडराते रहते हैं।[2] यशपाल के उपन्यास 'देशद्रोही' में शिवनाथ सब्जी मण्डी की नीची गली में हरदेव के यहां रहता है, गली बहुत तंग है। जिसमें तांगा जाने की भी राह न थी। गली कच्ची थी। जिसमें गड्ढ़े बन गये थे, ऊपर मक्खियों और मच्छरों के बादल मंडरा रहे थे। मध्यवर्ग की स्त्री 'राजबीबी' जब उस गली में जाती है, तो गली के बच्चे जो केवल शरीर के ऊपरी भाग में फटे चीथड़े पहने, नाक बहते, टेड़ी–सीधी आँखों से उन्हें आश्चर्य से देखने लगते हैं।[3] शिवनाथ का रहने का स्तर इस बात को प्रमाणित करता है कि निम्न वर्ग का व्यक्ति निम्न जगह में रहने के लिये विवश है।

यशपाल के उपन्यास 'दादाकामरेड' के पात्र अख्तर के क्वार्टर में एक छोटी सी कोठरी थी, कोठरी में दरवाजे के एक ओर चूल्हा था। सामने कुछ कनस्तर और डिब्बे धरे थे, दाईं तरफ की दीवार में खूंटियों से बंधी अलगानी पर कुछ कपड़े टंगे हुए थे। नीचे एक खाट पर मैला, फटा लिहाफ बिस्तर पर पड़ा था। चूल्हे पर रखी मिट्टी के तेल की डिबरी से कोठरी के फर्श पर कुछ लाल-सा प्रकाश और छत का धुआं फैला था।[4] इस प्रकार स्पष्ट है कि अख्तर एक निम्न वर्ग का व्यक्ति है। यही स्तर कानपुर शहर के तंग मोहल्ले में निवास करते अधिकतर निम्नवर्ग के लोगों का है। सभी मकान पुराने ढंग के बने हैं। अभी तक उन मकानों में प्रकाश के लिये बिजली का तार न पहुंच सका था, उनकी छतें, खपरैल और छप्पर की बनी थीं। अधिकतर समाज में जो निम्न वर्ग है उनके मकानों की स्थिति ऐसी ही है। यशपाल जी ने निम्नवर्ग के स्तर को न केवल निकटता से देखा है बल्कि उसी स्तर में रहकर अपने को जिया है। ये निम्न मध्यवर्ग से थे। यशपाल ने मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के अन्त को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। यह लक्ष्य साहित्य की रचना करते समय भी उनके मस्तिष्क में छाया रहा। उन्होंने कहीं साधनहीनों को शोषण से मुक्ति के लिये छटपटाते हुए दिखाया है तो कहीं शोषितों के प्रति सहानुभूति प्रकट कर शोषकों के प्रति घृणा एवं रोष को व्यक्त किया है।

ग्रामीण वर्ग, जीवन की सभी सुख सुविधाओं से वंचित है। इस वर्ग के पुरुष ही नहीं, स्त्रियां भी अपना पेट भरने के लिये कठिन परिश्रम करती हैं। यशपाल जी ने अपने उपन्यास 'झूठा सचः देश का भविष्य' में गांव का चित्र खींचा है। कनक जब 'अलीगंज' गाँव में जाती है, तब वह देखती है, गाँव की स्त्रियां अपनी विकट कठिनाइयों में भी बच्चों को शरीर से लिपटाये, जीविका के लिये जी तोड़ परिश्रम में लगी रहतीं और अपने बच्चों को स्तन से लगाये, खेत में निराई करती रहतीं, गोबर समेटते समय कमर पर एक बांह से बच्चों को लिये रहतीं, या गोद में बच्चा और सिर पर पानी का घड़ा लिये चलतीं। फर्श पर बच्चों के मल–मूत्र कर देने पर भी काम में लगी स्त्रियां, काफी समय तक फर्श पर पड़े मल–मूत्र की उपेक्षा करके दूसरे कामों में लगी रहतीं।[5] इतना कठिन परिश्रम करके ये अपने बच्चों को भरपेट खाना, और पूर्ण वस्त्र तक नहीं दे पातीं। इस तरह की स्त्रियों को देखकर मध्यवर्ग की कनक सोचती है कि अपनी बेटी जया को गाँव के नंगे, मैले से पुते, पेट फूले, सूखे अंग बच्चों के साथ कैसे खेलने दे।[6] कनक के स्वभाव से प्रमाणित होता है कि मध्यवर्ग भी अपने बच्चों को निम्न वर्ग के साथ खेलने नहीं देता अर्थात् निम्न वर्ग को समाज में हीन भावना से देखा जाता है।

यशपाल के उपन्यास 'मनुष्य के रूप' में सोमा जीवन निर्वाह के लिये बकरियां चराती है। सोमा की स्थिति अत्याधिक दयनीय है। सोमा फटे हुये कपड़ों में भी संकोच करते हुये पानी के लिये गाँव से दो मील दूर बावड़ी पर जाती है।[7] यशपाल जी के 'अमिता' उपन्यास में कलिंग राज्य के वेणुका गाँव में भी निम्नवर्ग के व्यक्तियों के रहने के घर छप्परों के बने थे। वे जीवन निर्वाह के लिये वृक्षों और झोपड़ियों की छाया में बंधे पशुओं की गन्दगी के समीप बैठकर, बांस चीरकर, डलिया और पिटारी बनाकर अपना जीवन व्यतीत करते थे। उनके बच्चे बिना वस्त्र के कुछ कोपीन (लंगोट) बाँधे, कन्धों पर झगला डाले, पीपल के समीप ही धरती में छिद्र नालियाँ बनाकर खेल खेलते रहते।[8] इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्रामीण कठोर श्रम करके भी अपने बच्चों को भरपेट भोजन और तन ढ़कने के लिये वस्त्र नहीं दे पाते हैं।

यशपाल जी ने नगरीय क्षेत्र के निम्न वर्ग का भी मार्मिक चित्रण किया है। 'मेरी तेरी उसकी बात' उपन्यास में कैनिंग रोड पर सीधी गली से पश्चिम में लगभग दो सौ कदम तक धोबियों, घोसियों की झोंपडियाँ या कच्ची बस्ती थी, इस कच्ची गली में सड़क से दो ढाई सौ कदम पर धोबियों के तीन

घर थे। दो साल पहले भारी वर्षा में धोबियों के घर गिर गये थे। जो फिर नही बन पाये।[9] निम्न वर्ग के सामने इतनी लाचारी है कि अगर एक बार घर गिर जाये तो उनमें इतनी क्षमता नही होती कि वह अपने घर को फिर से बना पाये। उपन्यास 'देशद्रोही' में जमालुद्दीन के लिए सबसे कठिन समस्या गर्मी के मौसम में रात बिताने की थी। पड़ोस में रहने वाले मजदूर गली में खटिया डालकर सो जाते। बिना रोशनदान की कोठरी की अपेक्षा गली में गरमी की उमस कम अनुभव होती थी परन्तु मच्छर अधिक हो जाते और दुर्गन्ध भी आती, कोठरी के भीतर लेटने से शरीर पसीने से भीग जाता।[10] इस प्रकार वह कठोर परिश्रम करने पर भी रात में चैन से सो नहीं पाता है। भरपेट भोजन प्राप्त न होने के कारण निम्न वर्ग के बच्चे आयु कम होने पर भी काम करने के लिए विवश हो जाते हैं। उपन्यास 'देशद्रोही' में खातून को दस–ग्यारह वर्ष की आयु में ही पेट की ज्वाला को शान्त करने के लिये होटल के फर्श साफ करने के लिये विवश कर दिया था।[11]

उपन्यास 'झूठा सचः वतन और देश' में जग्गी ग्यारह–बारह बरस का कांगड़े जिले का लड़का था। उसका काम दिनभर बर्तन मलना, झाड़ू–बुहारी करना ही था। उसके कपड़े चीकट मैले रहते थे, चेहरे पर मैल और कालिख की परत चढ़ी रहती थी।[12] यह आयु खेलने कूदने की है लेकिन लाचारी में उसे मजदूरी करनी पड़ती है। उपन्यास 'झूठा सचः देश का भविष्य' में ही बिंदो की बुढ़िया दादी मेले में दुपट्टे में सिमटी, हाथ जोड़े थी। उसकी छीजी हुई बदरंग सलवार–कमीज, झुर्रियां से भरा चेहरा, वह अपनी बहू के साथ पंसारी के यहाँ मसाले कूट–पीसकर, कभी बनिये के यहाँ दालें बीनकर निर्वाह कर रही थी।[13]

उपन्यास ''दादा कामरेड'' में निम्न वर्ग की बच्ची मुन्नी भूख लगने पर खाना माँगती है। खाना ना मिलने पर वह रोती है। इस पर लाचार माँ जमीला उसे आटे में नमक डालकर रोटियाँ पका कर देती है लेकिन बच्ची भूखी ही सो जाती है। उपन्यास 'अमिता' में शूरसेन देश का मोद निर्धन होने के कारण अपने बेटे को पालने में असमर्थ हैं, इसलिये वह विवश होकर अपने बेटे को मूर्ति व्यापारी 'जेटक चतरथ' के यहाँ बेच देता है।[14]

उपन्यास 'मनुष्य के रूप' में धनसिंह का घर मिट्टी और फूस का बना था। वे राजपूत बजरसिंह के कर्जदार थे। उनके यहाँ से बुलावा आने पर धनसिंह को उनके यहाँ काम करने के लिये पानी भरने, कभी लकड़ी ढोने या दूसरे कामों के लिये लाचारी में किसी भी समय जाना पड़ता था। धनसिंह का बाप मर गया। कर्ज न दे सकने के कारण बजरसिंह ने उसके घर की कुर्की कर वाली, लाचारी में वह नत्थे साह की जमीन पर बस गया और उसकी खच्चरें हाँकने की नौकरी करने लगा।[15] समाज में निम्न वर्ग के मनुष्य का कोई मूल्य नहीं होता। जहां एक तरफ धनसिंह के पिता का देहान्त होता है वहीं उसे घर से निकाल दिया जाता है। 'मनुष्य के रूप' उपन्यास में निम्न श्रेणी की स्त्री नौकरी न मिलने पर फेरी का काम करती है। कुछ स्त्री अन्नास, नारंगी और दूसरी चीजें बेचती थीं। कुछ स्त्री कटे हुए अन्नास में नमक मिर्च लगा, केले के पत्तों पर रखकर बेच रही थी। निम्न वर्ग में कभी सन्तोष नहीं होता, उसके साथ केवल कष्ट जुड़े रहते हैं, निम्न वर्ग का मनुष्य मृत्यु के बाद ही इन कष्टों से मुक्ति पाता हैं। इनके परिवारों में आर्थिक समस्याएँ विकराल रूप धारण किए रहती हैं।

यशपाल जी ने निम्न वर्ग के जीवन को बहुत कठिनाईयों से भरा हुआ माना है। जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए न उनके पास भर पेट भोजन है, तन ढकने के लिए न उचित वस्त्र है और न रहने के लिये मकान है। पेट भरने की चिन्ता उनको सदैव बनी रहती है। समाज में सबसे

अधिक परिश्रम करने वाला, कर्म को ही जीवन मानने वाला, सभी सुख सुविधाओं से दूर रहने वाला वर्ग निम्न वर्ग ही है।

संदर्भ

1. घोष, डॉ० श्यामसुंदर. भारतीय मध्यवर्ग, पृष्ठ **1.**
2. यशपाल. देशद्रोही. पृष्ठ **73.**
3. यशपाल. देशद्रोही. पृष्ठ **59.**
4. यशपाल. दादा कामरेड. पृष्ठ **47.**
5. यशपाल. झूठा सचः देश का भविष्य. पृष्ठ **461.**
6. यशपाल. झूठा सचः देश का भविष्य. पृष्ठ **460.**
7. यशपाल. मनुष्य के रूप. पृष्ठ **8—12.**
8. यशपाल. अमिता. पृष्ठ **21—22.**
9. यशपाल. मेरी तेरी उसकी बात. पृष्ठ **75.**
10. यशपाल. देशद्रोही. पृष्ठ **112.**
11. यशपाल. देशद्रोही. पृष्ठ **83.**
12. यशपाल. झूठा सचः वतन और देश. पृष्ठ **237.**
13. यशपाल. झूठा सचः देश का भविष्य. पृष्ठ **89.**
14. यशपाल. अमिता. पृष्ठ **54.**
15. यशपाल. मनुष्य के रूप. पृष्ठ **318.**